फरीदाबाद
मजदूर समाचार
जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >
डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 281 1/– नवम्बर 2011

जीवन द्वारा समय की नई रचना

"मजदूर समाचार" ने पिछले तीस वर्षों के दौरान जीवन की अनगिनत दस्तकों को सुना है। उनके बारे में सोचा है। जीवन की दस्तकों ने अन्य के साथ-साथ स्वयं से भी जूझने को मजबूर किया है। इन पाँच महीनों के दौरान जीवन की लौ की ऊर्जा, पैमाना, दमक, उत्साह अद्भुत हैं। जीवन के यह क्षण अपनाने के हैं, इनके संग एकमय होने का समय है यह। हम एकमय और एकमेव के युग में प्रवेश कर गये हैं।

मारुति सुजुकी मानेसर में युवा साथियों ने नये जोड़ों की रचना द्वारा जीवन की सम्भावनाओं की झलक दिखाई है। हवा में कुछ नया तैरने लगा है।

कल ही की बात है। मैट्रो में एक यात्री गाने लगा। वह न तो दुखी था और न ही पीये हुये, वह किसी के वियोग में नहीं गा रहा था और न ही वह पागल था। वह गा रहा था। लोग संग-संग गाने लगे। यात्री मगन हो गये, अपने-अपने स्टेशनों के पार जाते गये और यह बात बताने वाला मित्र तो गुड़गाँव हुडा सिटी सेन्टर ही पहुँच गया।

मजदूर चाहते क्या हैं ?

जून के उन 13 दिन के दौरान कम्पनी चकित थी। कम्पनी की शिकायत ने सरकार को चकित किया। फैक्ट्री पर कब्जा किये वरकरों के खिलाफ पुलिस क्या कार्रवाई करे?

जुलाई में नये जोड़ों, नये तालमेलों की सृजना और उनका प्रचुर होते जाना। स्थाई और अस्थाई मज़दूरों के जोड़ ने 27-28 जुलाई को प्रकट हो कर कम्पनी तथा सरकार को पीछे हटने को मजबूर किया।

अगस्त होते हुये सितम्बर आते-आते तो "मजदूर चाहते क्या हैं?" का प्रश्न बेचैनी-बेकरारी लिये व्यापक हो गया। दक्षिणी दिल्ली में दक्षिणपुरी के एक युवा लेखक ने चर्चा के दौरान कहा : "भैया, सिस्टम का एक्सपाइरी डेट होता है। जब वह आ जाता है तब जीवन को उसे पहचान लेना होता है।"

वॉल स्ट्रीट में भोले की बारात

अमरीका में न्यू यॉर्क शहर में बर्तनों की साइज पर जीवन्त बहस। वॉल स्ट्रीट पर कब्जा करने उमड़े हजारों लोग। बूढे, जवान, स्त्री, पुरुष, काले, गोरे, पीले, साँवले, स्थाई व अस्थाई नौकरी वाले दिन-रात नाचते-गाते-चर्चा करते हजारों नये जोड़, नये तालमेल बनाते लोग। बदल जाते हैं जीवन में बर्तनों के आकार, पैमाने और उनके प्रयोग। लोग चाहते क्या हैं ?

अनन्त गूँज। अनेक पोस्टर। कईयों में "वॉट इज आवर डिमाण्ड?" ("हमारी माँग क्या है?")। एक सुन्दर पोस्टर में सट्टा बाजार (शेयर मार्केट) के साण्ड पर नृत्य की उल्लास मुद्रा में युवती और पीछे धूल उड़ाती आती सशस्त्र पुलिस।

माँग नहीं हैं यह भिड़न्त है

उत्पादन के लिये स्थापित मूल्यों को सीधी चुनौती है मानेसर में युवा साथियों का कहना : "तानाशाही सहन नहीं करेंगे।" नये जोड़ों ने इस चुनौती को एक नया आयाम दिया है। क्रिया के वाहक मजदूर बन गये हैं।

प्रतिक्रिया जिनकी नियति बन गई है वे अवाक हैं, हक्के-बक्के हैं, दिग्भ्रमित हैं, भुरभुरे-बिखरने की कगार पर खड़े हैं। उनके अपने लिये अच्छा होगा अपने बोर्डरूमों से निकल कर ड्राइंगरूमों में बच्चों के संग बैठ कर एक्सपाइरी डेट चिपके सिस्टम को एक तरफ रख कर जीवन के बारे में चिन्तन-मनन करें।

कालबद्ध सिस्टम अनन्त जीवन

मानेसर में एक युवा साथी : "रुटीन से परे जीवन के बारे में पहली बार सोचा है, फुर्सत में ढँग से सोचा है।" हजारों साथियों ने कई फैक्ट्रियों में, कई बस्तियों में, कई घरों में, कई ठियों-अड्डों पर इन पाँच महीनों के दौरान एक नई गति और नई ऊर्जा से जीवन के बारे में सोचा है।

जून में फैक्ट्री के अन्दर, अक्टूबर में फैक्ट्रियों के अन्दर मजदूरों ने मशीनों की गति और शोर को थामा। फुर्सत से एक-दूसरे को देखा, नये ढँग से एक-दूसरे को सुना। मशीनों को थाम कर इन्सानों ने नये समय का उत्पादन आरम्भ किया। यह नया समय व्यवस्था की विषय-वस्तुओं से बाहर है।

फैक्ट्रियों पर कब्जा किये मनुष्यों का मिल कर बैठना-पसरना, राग-रागिनी गाना, खूब हँसना, इत्मिनान से खूब बातें करना, जीवन के बारे में सामुहिक विमर्श, उकसाने पर नाचने लगना, हजारों के बीच बातें करते-करते सो जाना, बिना अलार्म के सपने देखना, नये क्षितिज को देखना — इस सब से हुआ नये समय का उत्पादन।

शॉप फ्लोर-असेम्बली लाइन जीवन के इस हस्तक्षेप से, नये समय के इस उत्पादन से हर वक्त छिद्रित रहेंगे।

सृजना : नये जोड़, नये समय

मानेसर के एक साथी ने कोलकाता के एक पत्रकार को चार्ली चैपलिन की मॉडर्न टाइम्स फिल्म का एक टुकड़ा दिखाया जिसमें असेम्बली लाइन पर काम करता एक मजदूर अपने जीवन की गति छोड़ कर मशीन की रफ्तार की जकड़ में आ जाता है। देख कर खूब हँसी आती है। मानेसर के साथी ने पत्रकार से कहा कि हम अपनी जीवन शक्ति को मशीन की गिरफ्त में नहीं जाने देंगे। हम मनुष्य रहेंगे, हम मशीन नहीं बनेंगे।

जीवन में महत्वपूर्ण क्या है ? जून से मानेसर ने इसे जहाँ देखो वहाँ प्रमुख प्रश्न बना दिया है। मानेसर के एक और साथी का कहना है कि आज पूरी दुनिया देख रही है पूरी दुनिया को बदलते हुये। विश्व-व्यापी जीवन की इस अँगड़ाई में मानेसर का नाद, उत्पादित नया समय और रचित नये जोड़ नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं। ■

दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में मजदूर

● **दिल्ली सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : *अकुशल श्रमिक 6422 रुपये (8 घण्टे के 247 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 7098 रुपये (8 घण्टे के 273 रुपये); कुशल श्रमिक 7826 रुपये (8 घण्टे के 301 रुपये)* । पच्चीस-पचास पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली-110054 ● **हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन: *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4644 रुपये (8 घण्टे के 179 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5294 रुपये (8 घण्टे के 204 रुपये)* । इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ ।

शिवालिक प्रिन्ट्स लिमिटेड मजदूर : "प्लॉट 21-22 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 24 अक्टूबर को 200 कैजुअल वरकर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये । गेट पर रहे — बोनस दो । छह घण्टे कामबन्द । चेयरमैन ढाई बजे आया, आश्वासन दिया । कैजुअल वरकरों को 25 अक्टूबर को बोनस दिया ।

"सैक्टर-6 में ही प्लॉट 47-48 स्थित कम्पनी की फैक्ट्री में मजदूरों ने 25 अक्टूबर को सुबह 9 बजे तक ओवर टाइम के पैसों के लिये इन्तजार किया और फिर काम बन्द कर दिया । एक घण्टे रुक कर रोटरी, डाइंग, टेबल, सैम्पलिंग, फिनिशिंग विभागों से निकल कर 250 मजदूर फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो गये । टाइम ऑफिस वाले निकल-निकल कर देखने लगे । परसनल मैनेजर देख कर गया । कैशियर ने पौने बारह बजे पैसे बाँटने शुरू कर दिये ।"

ओसवाल डाई कास्टिंग श्रमिक : "48-49 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर रविवार, 16 अक्टूबर को काम करने फैक्ट्री नहीं पहुँचे । सोमवार को फैक्ट्री में उपस्थित रह कर मजदूरों ने दिन और रात में काम नहीं किया । कुल मजदूरों का 95-98 प्रतिशत हैं ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर । मैनेजरों ने मीटिंग ली । मजदूरों ने चाय नहीं पी । आज, 18 अक्टूबर को भी काम बन्द... बोनस माँग रहे हैं जिसे बीस वर्ष से नहीं दे रहे । इन्सेन्टिव जिसे बन्द कर दिया वह दो । वर्दी दो । ओवर टाइम में रोटी के लिये देते 12 रुपये बढाओ ।"

लखानी वरदान ग्रुप कामगार : "प्लॉट 131, 144, 265 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 21 अक्टूबर को दिन के 12 बजे काम बन्द कर दिया । बोनस 20 की जगह 8.33 प्रतिशत करने के विरोध में काम बन्द । 22 अक्टूबर को सुबह-सुबह कई थानों की पुलिस, दंगा वाहन, अग्निशमन गाड़ी, पुलिस एम्बुलैन्स सैक्टर-24 में । चेयरमैन ने 20 प्रतिशत बोनस की घोषणा की ।"

विंगफील्ड वरकर : "ए-292 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कारीगरों को 12 घण्टे रोज काम पर महीने के 7400 रुपये देते हैं । ई.एस. आइ. नहीं, पी.एफ. नहीं । पीने का पानी खारा ।"

बॉश चेसिस सिस्टम मजदूर : "प्लॉट 16 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर, 50 ट्रेनी और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 600 मजदूर **मारुति सुजुकी** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं । ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूरों को 12 अक्टूबर को वापस भेज दिया और कहा कि 17 अक्टूबर को फोन कर पूछ लेना कि आना है की नहीं ।"

ब्रिजस्टोन टी वी एस श्रमिक : "प्लॉट 10 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 120 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 600 वरकर **मारुति सुजुकी** और **होण्डा** का काम करते हैं । ठेकेदार के जरिये रखे सब मजदूरों को 15 अक्टूबर को वापस भेज दिया और 4 दिन बाद आने को कहा है ।"

धीर इन्टरनेशनल कामगार : "299 उद्योग विहार फेज-2, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में दस ठेकेदारों के जरिये रखे 900 मजदूरों की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, बोनस नहीं । हैल्परों की तनखा 4000 रुपये और कारीगर पीस रेट पर । सुबह 9 से रात 8½ तक रोज काम और उसके बाद रात 2 बजे तक रोक लेते हैं । महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । तनखा हर महीने देरी से, सितम्बर की 22-23 अक्टूबर को जा कर दी । हर महीने एक-दो ठेकेदार भाग जाते हैं और कम्पनी जिम्मेदारी नहीं लेती, मजदूरों के 15-20 दिन किये काम के पैसे मारे जाते हैं । गाली, मारपीट भी — प्रोडक्शन मैनेजर सुपरवाइजरों को गाली देता है । पानी ठीक नहीं । शौचालय गन्दे ।"

निधि मैटल ऑटो कम्पोनेन्ट्स वरकर : "मिल्क प्लान्ट रोड, आर्यनगर, बल्लभगढ स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **हीरो मोटरसाइकिल** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं । महिला मजदूरों की दिन की 11 घण्टे की शिफ्ट । रविवार को भी काम । ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से । हैल्परों की तनखा 3000-4000 और ऑपरेटरों की 4000-4500 रुपये । दो सौ मजदूरों में 20-25 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. । जाँच के लिये श्रम अधिकारी 2 सितम्बर को फैक्ट्री पहुँचे तो पौने दो सौ मजदूरों को पीछे के गेटों से बाहर निकाल दिया । पावर प्रेस कई हैं, एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं । हाथ कटने पर पीछे की तारीख से ई.एस.आई. बनवा देते हैं । छोटे एक्सीडेन्ट पर प्रायवेट में उपचार । गाली देते हैं, मारपीट भी ।"

सुरक्षाकर्मी : "आई-18 लाजपतनगर-2, दिल्ली में कार्यालय वाली **इलाइट सेक्युरिटी सर्विस** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है । साप्ताहिक अवकाश नहीं । रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 4500-8500 रुपये देते हैं । हस्ताक्षर दो स्थानों पर करवाते हैं — जो देते हैं उस पर और 10,000 रुपये पर । ई.एस. आई. व पी.एफ. 10,000 पर काटते हैं । सितम्बर की तनखा 10 अक्टूबर को देनी आरम्भ की व आज 21 अक्टूबर तक सब गार्डों को नहीं दी है । नया ग्रेड आने पर एरियर नहीं देते, वाउचर पर हस्ताक्षर करवा लेते हैं । बोनस नहीं देते । गाली देते हैं । ओवर टाइम को दिखाते नहीं ।"

किरण उद्योग मजदूर : "प्लॉट 2 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **होण्डा, सुजुकी, यामाहा, हीरो** की स्कूटी के रिम, हब, टायर-ट्यूब फिट करते हैं । काम का बोझ ज्यादा है, मजदूर छोड़ जाते हैं । छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते । हर महीने गड़बड़ कर कुछ मजदूरों के 300-500 रुपये खा जाते हैं । स्थाई स्टाफ वाले ही हैं, मजदूरों को तीन ठेकेदारों के जरिये रखा है । फैक्ट्री में पीने के पानी का प्रबन्ध ही नहीं है । जब कभी सप्लाई का पानी आता है तब पीते हैं या फिर फैक्ट्री के बाहर ठेले वाले के यहाँ पानी पीते हैं । प्यासे मजदूर 7 अक्टूबर को हो-हो करने लगे । लाइन बन्द । इन्चार्ज ने पानी की 5 बड़ी बोतलें मँगवाई ।"

नाइटक्राफ्ट श्रमिक : "490 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8½ की ड्युटी रोज है और फिर सिलाई कारीगरों को रात 11 तक तथा फिनिशिंग वरकरों को रात 1 बजे तक रोक लेते हैं । सिलाई कारीगर पीस रेट पर— पीस सँख्या घटा देते हैं, रेट 3 रुपये बता काम के बाद 2½ कर देते हैं । महीने में इस प्रकार गड़बड़ कर 2-3 हजार रुपये खा जाते हैं । छोड़ने पर पैसों के लिये बहुत चक्कर कटवाते हैं । सितम्बर की तनखा 22-25 अक्टूबर को दी, रात 10-11 बजे पैसे देने शुरू करते हैं ।"

ट्रैक्टल टिरफोर कामगार : "पृथला-दुधौला रोड, पलवल स्थित फैक्ट्री में 28 स्थाई मजदूर और 7-8 ठेकेदारों के जरिये रखे 275 वरकर काम करते हैं । ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की सुबह 8½ से रात 7½ की शिफ्ट है और फिर पूरी रात भी रोक लेते हैं । महीने में 80-120 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से । तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं पर कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूर को नहीं मिलते । हर महीने गड़बड़ कर 200-300 रुपये खा जाते हैं । पानी खराब । शौचालय गन्दे ।"

ई.एस.आई. वरकर : "सैक्टर-8 फरीदाबाद स्थित ई.एस.आई. अस्पताल में ठेकेदार के जरिये रखे 41 मजदूरों में हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3500-3900 रुपये और कुशल मजदूरों को 5000 रुपये देते हैं । लिस्ट में कारीगर को 10500 और हैल्पर को 9100 रुपये दिखाते हैं । ई. एस.आई. व पी.एफ. 20 की हैं और इन्हें भी नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते ।"

पी एण्ड पी ओवरसीज मजदूर : "प्लॉट 95 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी रोज है और उसके

(बाकी पेज तीन पर)

दिल्ली-गुड़गाँव-फरी..

बाद रात 1 तक, अगली सुबह 4-5 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150-180 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। गड़बड़ कर महीने में 500 रुपये तक खा जाते हैं। ठेकेदार नहीं हैं, सब कैजुअल वरकर हैं और ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 में 8 की ही हैं। शौचालय बहुत गन्दा।"

सुपर ऑटो इलेक्ट्रिक श्रमिक : "प्लॉट 9 जे सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस नहीं देते। कहते हैं कि हमारे यहाँ ऐसा कानून नहीं है।"

भारत इम्ब्राइड्री कामगार : "282 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। रोज 12 घण्टे काम पर 30 दिन के हैल्परों को 4500 और ऑपरेटरों को 6000 रुपये देते हैं। गाली देना तो साहबों का काम ही है।"

एन एच के वरकर : "प्लॉट 31 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 300 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 350 वरकर **मारुति सुजुकी** वाहनों के स्टीयरिंग बार बनाते हैं। इधर काम कम है, महीने में 80 की जगह 40 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस नहीं देते, तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं लेकिन छोड़ने पर मजदूर को फण्ड के पैसे नहीं मिलते, यूँ भी हर महीने गड़बड़ कर 100 से 500 रुपये खा जाते हैं। कैन्टीन में भोजन खराब।"

प्राइम इण्डिया पोलिमिक्स मजदूर : "प्लॉट 132 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **हीरो, मारुति सुजुकी, होण्डा, सुजुकी** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को जबरन 8 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान मात्र 16 रुपये प्रति घण्टा। सुबह 8 से रात 9 वाली शिफ्ट में रात 10½, अगली सुबह 6 तक रोक लेते हैं। पूरी रात रोकते हैं तब रोटी के लिये 30 रुपये देते हैं। दो में एक शौचालय हर समय जाम रहता है और दूसरे पर लाइन लगी रहती है।"

सरगम एक्सपोर्ट श्रमिक : "153 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में दिवाली पर उन्हीं मजदूरों को बोनस देते हैं जो अन्दर होते हैं। बाकी जिनका बोनस बनता है उन से आवेदन ले लेते हैं और इस बार तारीख भी नहीं बताई है।"

डेन्सो कामगार : "प्लॉट 3 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में निर्माण कार्य कर रहे **एमकॉन** ठेकेदार के जरिये रखे 200 मजदूरों में से एक मजदूर 13 अक्टूबर को मिट्टी से दब गया, मृत्यु हो गई।"

सुपर फैशन वरकर : "12/4 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 19 अक्टूबर को साँय 4 बजे गाली देने पर जनरल मैनेजर की पिटाई हुई।"

क्रू बी ओ एस मजदूर : "प्लॉट 37 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में अगस्त और सितम्बर की तनखायें 15 अक्टूबर तक नहीं दी......

मारुति सुजुकी डायरी....... (पेज चार का शेष)

हड़ताल, Sit-In-Strike एवं धरना इत्यादि नहीं करेगा। बाकी 9 श्रमिकों को भी प्रारम्भिक जांच पूर्ण होने के बाद लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 20–10–2011 से वापिस नौकरी पर लिया जायेगा।

3. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि दिनांक 07–10–2011 से किसी भी श्रमिक के कार्य वापसी तक "कार्य नहीं तो वेतन नहीं" के सिद्धान्त के अनुसार इन दिनों का कोई वेतन देय नहीं होगा इसके अतिरिक्त जुर्माने के तौर पर मात्र एक दिन के वेतन की कटौती की जायेगी।.......

6. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि सभी श्रमिक कल दिनांक 20–10–2011 से तत्काल "बी." शिफ्ट से ड्युटी पर रिपोर्ट करेंगे।......

10. श्रमिकों के लिए दिनांक 30 सितम्बर 2011 से पूर्व की भांति बस सेवा जारी रहेगी।

11. दोनों पक्षों में यह भी तय हुआ कि संस्था में ठेकेदारों के श्रमिकों के बारे में संस्था के प्रबन्धक ठेकेदारों से अनुरोध करेंगे कि ठेकेदारों के श्रमिकों के विषय में 29 अगस्त 2011 की स्थिति बहाल की जायेगी।...........

✱21 अक्टूबर की साँय मारुति सुजुकी मजदूर खुश थे। नारे लगा रहे थे। विश्वास था कि जो 30 निलम्बित हैं वो 10 दिन में आ ही जायेंगे। लेकिन प्रधान नर्वस था, कह कुछ रहा था और मुँह से निकल कुछ रहा था। समझौता पढ कर नहीं सुनाया, वैसे ही मुँहजबानी बताया। महासचिव तो मंच पर ही नहीं आया था, मजदूरों ने दबाव दे कर बुलवाया। लीडरों की आवाज में दम नहीं था। भाषण देने वालों ने नारे भी नहीं लगवाये।

✱22 अक्टूबर को ए-शिफ्ट में मजदूर फैक्ट्री गये। न तो सुबह और न ही साँय कोई भी कमेटी वाला हाथ मिलाने आया। क्यों नहीं आये? मीडिया वाले आये थे।

✱22 को ही फैक्ट्री मैनेजर ने मीटिंग ली। विभागों से 2-2, 3-3 थोड़े कम बोलने वालों को साहबों ने भेजा था। फैक्ट्री मैनेजर का चेहरा भारी-भारी सा हो रखा था। बोले "मायूस क्यों बैठे हो? खुश रहो यार।" मजदूर : "हम कब नाराज हैं, हम तो खुश हैं।" फैक्ट्री मैनेजर ने कहा कि लाभ में कुछ हिस्सा मजदूरों को देने के लिये चर्चा कर रहे हैं। ट्रेनी के और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के पैसे बढा दिये हैं, स्थाई मजदूरों की अप्रैल में एग्रीमेन्ट लागू होगी इसलिये अभी नहीं बढाये। वर्ष में 16 छुट्टी करने पर कोई पैसे नहीं कटेंगे। बसों की सँख्या और रूट बढायेंगे। वर्क्स कमेटी बना लो। मजदूर : "यह कमेटी कब तक चलेगी?"

✱रविवार, 23 अक्टूबर को लगभग सब मजदूरों के कानों में यह बात पहुँची कि कुछ गलत हुआ है। प्रधान और महासचिव ने गुपचुप नौकरी से इस्तीफे दे दिये थे। बताया क्यों नहीं? कमेटी के किसी भी सदस्य ने बताया क्यों नहीं? प्रधान समझौता सुनाने के बाद से गायब। बुला कर अलग से महासचिव को मजदूरों ने खूब खरी-खरी सुनाई। पूरी कमेटी को नकार दिया है। निलम्बित बचे 28 के बारे में 5 ने, 15 ने नौकरी से इस्तीफे दे दिये हैं वाली बातें हैं।

✱फैक्ट्री में मजदूर एग्रीमेन्ट की चर्चा ही नहीं कर रहे – जिन्होंने समझौता किया है उन से अब हमारा कोई रिश्ता नहीं है। चिन्ता है पर डर नहीं है। डर तो निकल गया है। चर्चायें हो रही हैं कि ऐसे में क्या-क्या करें? फैक्ट्री में न तो मैनेजमेन्ट हावी है और न ही मजदूर हावी हैं। सोमवार, 24 अक्टूबर को पे-स्लिप में पुरानी यूनियन के लिये चन्दे के 10 रुपये काटने की मजदूरों में चर्चा। घबरा कर कम्पनी ने पे-स्लिप ही नहीं दी। नई बनवाई, उसमें 10 रुपये नहीं काटे, यह पे-स्लिप 30 अक्टूबर को दी।

✱जैसे हालात बने थे उनमें मारुति सुजुकी को मजबूर हो कर ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 मजदूरों को ड्युटी पर लेना पड़ा। और, मामले का सुजुकी समूह में सिमट जाना मजदूरों के लिये सहयोग-समर्थन-सहानुभूति पर अधिकाधिक आश्रित होना लिये था।

✱सामाजिक प्रक्रिया को समझने की क्षमता साहबों में नहीं होती। इसलिये वे इस-उस व्यक्ति अथवा छोटे समूह को जिम्मेदार ठहराते हैं और उन से निपटने में पूरी ताकत लगा देते हैं। इसलिये मारुति सुजुकी में 30 मजदूरों तथा सुजुकी पावरट्रेन में 3 मजदूरों से पार पाने में सरकार और कम्पनी चैन देख रही हैं। जबकि, इन पाँच महीनों ने इन चन्द मजदूरों को ऐसी स्थिति में ला दिया था कि यह लोग मजदूरों पर नियन्त्रण स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे। लेकिन, यह इस समय का फेर है कि सरकार और कम्पनी ने बौखलाहट में अपने सम्भावित औजारों को फेंक दिया है, ऐसे मजदूरों को नौकरी छोड़ने के लिये तैयार किया।

आज नये सिरे से, नये धरातल पर जीवन दस्तक देने लगा है।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✱अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। ✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

अंग्रेजी में इन्टरनेट पर libcom पर बहुत रोचक The Coming Insurrection है जिसे The Invisible Committee ने पिरोया है।

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (3)

✱ साँय 4 बजे 7 अक्टूबर को आई.एम.टी. में 11 फैक्ट्रियों पर मजदूरों का कब्जा। मामला स्वाभाविक तौर पर मारुति सुजुकी से बाहर फैला था। तेजी से फैलने, हजारों फैक्ट्रियों में तीव्र हलचल की सम्भावना-वास्तविकता सामने खड़ी थी।

✱ सरकार, कम्पनियों, बिचौलियों के दबाव ने 8 अक्टूबर को सुजुकी समूह की चार फैक्ट्रियों तक मजदूरों का कब्जा सीमित किया। मारुति सुजुकी गुड़गाँव फैक्ट्री पर कब्जा नहीं होने दिया लेकिन सुजुकी पावरट्रेन इन्जन व ट्रान्समिशन, कास्टिंग तथा सुजुकी मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों में उत्पादन आरम्भ करवाने में बिचौलिये असफल रहे। इन फैक्ट्रियों के मजदूरों को 14-16 सितम्बर के दौरान काम बन्द करने तथा काम शुरू करने का अनुभव था।

✱ मारुति सुजुकी मानेसर के निलम्बित 44 स्थाई मजदूरों और ड्युटी पर नहीं लिये गये ठेकेदारों के जरिये रखे 1200-1400 प्रोडक्शन वरकरों का मामला एकमय हो गया था। सुजुकी पावरट्रेन और मोटरसाइकिल फैक्ट्रियों के मजदूरों ने इस स्थाई-अस्थाई मजदूरों के जोड़ को चार फैक्ट्रियों का साँझा मामला बना दिया।

✱ हिसार लोक सभा उपचुनाव में उलझी राज्य सरकार कुछ खास करने की स्थिति में नहीं थी। चार फैक्ट्रियों पर मजदूरों का कब्जा 7 से 13 अक्टूबर के दौरान सहज-सामान्य रहा। कम्पनी को कुछ सूझ नहीं रहा था। साहबों को समझ में नहीं आ रहा था कि मजदूर चाहते क्या हैं।

✱ एक फैक्ट्री में मजदूरों के बीच चर्चा : "पहले हड़ताल में बाहर हो जाते थे। अब फैक्ट्री के अन्दर ही रहते हैं। ऐसा इसलिये कि बाहर रहने में फैक्ट्री हाथ से निकल जाती है और कम्पनी को मनमानी करने का मौका मिलता है। फैक्ट्री के अन्दर रहने से फैक्ट्री मजदूरों के नियन्त्रण में रहती है।" लेकिन..... लेकिन फैक्ट्री से बाहर कर दिया जाना अथवा बाहर होना तत्काल अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों से तालमेल का प्रश्न प्रस्तुत करता है और विभिन्न फैक्ट्रियों के मजदूरों के तेजी से एकमय होने की सम्भावना बढाता है। हाँ, मात्र गेट के बाहर बैठना और फूँ-फाँ तो है ही फँसना-फँसाना।

✱ मारुति सुजुकी मजदूरों का यह रुख कि समस्या हमारी है और अन्य के सहयोग-समर्थन-सहानुभूति से हल हो जायेगी एक बड़ी बाधा बनी रही अक्टूबर में भी आई.एम.टी. मजदूरों के साझा होने में, एकमय होने में। सुजुकी समूह की 4 फैक्ट्रियों के मजदूरों की शक्ति को पर्याप्त मानना सिकुड़ना लिये था, सिकोड़ने वालों के हाथों में फँसना लिये था।

✱ रेडियो-टी वी-अखबारों के जरिये प्रचार कि कम्पनी का कुछ नहीं बिगड़ेगा, यहाँ से गुजरात चली जायेगी, यहाँ दो लाख नौकरियाँ खत्म हो जायेंगी, केन्द्र और हरियाणा सरकारों को टैक्सों में भारी नुकसान, फैक्ट्रियाँ तो जुगाड़ कर लेंगी पर वर्कशॉपों का दिवाला निकल जायेगा, मारुति सुजुकी में तनखायें अच्छी हैं और वे मजदूर अपनी ही सोच रहे हैं....... ऐसी बातें दिन काटने और जीवन जीने के उभरे अति महत्वपूर्ण प्रश्न को ढँकने में लगी थी।

✱ सुनना सब की पर करना अपने मन की के कारण मारुति सुजुकी मजदूर किसी भी बिचौलिये की मुट्ठी में नहीं आये। ऐसे में यूनियनों ने समर्थन के लिये 7 सदस्यों की समिति बनाई जिसकी 13 अक्टूबर को फैक्ट्री गेट पर आमसभा में सुजुकी समूह की फैक्ट्रियों के मजदूरों के अलावा भाषण देने पहुँचे नेता ही थे। हिसार चुनाव 13 को हो गया था और 13 को ही पंजाब व हरियाणा हाई कोर्ट का फैक्ट्री खाली करने का आदेश...... नेता बोले कि सरकार ताकत का इस्तेमाल करेगी तो वे आई.एम.टी. स्तर पर, गुड़गाँव स्तर पर, हरियाणा स्तर पर, भारत स्तर पर तुरन्त एक्शन लेंगे।

✱ पुलिस 13 की रात पावरट्रेन गेट से हलवाई को ले गई। भोजन बनाने का प्रबन्ध अलियर गाँव में किया। मानेसर थाने में भारी सँख्या में पुलिस। तहसीलदार कार्यालय पर हरियाणा रोडवेज की खाली बसों की कतार। डी.सी. गुड़गाँव 14 अक्टूबर को मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर गया और वहाँ मजदूरों को उच्च न्यायालय के आदेश बता कर फैक्ट्री से बाहर बैठने का कहा, वार्ता शुरू करवाने की बातें की।

✱ यूनियनों की समिति को, यूनियन लीडरों को फोन पर फोन किये गये और फैक्ट्रियाँ बन्द कर, मजदूरों को साथ ले कर आने को कहा। नेता बोले कि 12 बजे मीटिंग कर बतायेंगे। कोई फैक्ट्री बन्द नहीं की गई और छोटा-बड़ा कोई नेता मारुति सुजुकी गेट पर नहीं पहुँचा। भोजन अन्दर नहीं जाने दिया गया। फैक्ट्री कमेटी रात 7½ तक बाहर के लिये तैयार हुई। रात 8 बजे एक लीडर आया और कमेटी से कहा कि बाहर निकाल लो। लीडर ने हैण्ड माइक से यही बात फैक्ट्री के अन्दर बैठे मजदूरों से कही। बहुत विरोध हुआ। मजदूर बाहर निकले.....

✱ 15 अक्टूबर को सुजुकी पावरट्रेन ट्रान्समिशन एण्ड इन्जन फैक्ट्री के अन्दर और बाहर भारी पुलिस बल (पंजाब केसरी संवाददाता अनुसार 4000 पुलिसवाले)। बाहर निकलने से इनकार करते 2000 मजदूर। मारुति सुजुकी से 2000 का जुलुस पावरट्रेन गेट पर पहुँचा और मजदूर वहाँ बैठ गये। तनाव बढा। कोई बीच में आया। पावरट्रेन मजदूर बाहर निकले। मारुति गेट तक संयुक्त प्रदर्शन।

✱ 17 को गुड़गाँव में यूनियनों द्वारा सभा, प्रदर्शन, ज्ञापन। दो घण्टे भाषण, कोई एक्शन प्लान की घोषणा नहीं। हुडा गैस्ट हाउस में त्रिपक्षीय समझौता वार्ता आरम्भ। कम्पनी द्वारा फिर कार उत्पादन के आँकड़ों का सिलसिला – थोड़े से मजदूर फैक्ट्री के अन्दर गये। पावरट्रेन में टूट सकते हैं के किस्से।

✱ त्रिपक्षीय वार्ता में शामिल सुजुकी पावरट्रेन के 3 मजदूरों को 19 अक्टूबर को अलग से एक कमरे में बैठा दिया और उनके फोन ले लिये। मारुति सुजुकी समझौते पर 19 अक्टूबर को हस्ताक्षर। पावरट्रेन समझौता 21 को हुआ और तब तक वार्ताओं में शामिल किसी मजदूर को बाहर नहीं जाने दिया। किसी से सम्पर्क नहीं करने दिया – बीड़ी पीने जाते तब, शौचालय तक पुलिसवाले साथ जाते। कहते हैं कि सरकार का कड़ा आदेश था कि समझौता होने से पहले मजदूरों को निकलने नहीं देना है। मारुति सुजुकी समझौते की धारा 6 के अनुसार 20 अक्टूबर को बी-शिफ्ट में काम आरम्भ करना...... सुनाया ही 21 अक्टूबर को साँय 4 बजे जा कर –

समझौते की शर्तें

1. दोनों पक्षों में यह तय हुआ कि दिनांक 30–9–2011 के समझौते के अनुसार जो 44 श्रमिक निलम्बित अवस्था में थे, उनमें से 22 श्रमिकों के विरुद्ध घरेलू जाँच जारी रहेगी/की जायेगी। घरेलू जांच समयबद्ध तरीके से 10 दिनों के अन्दर-अन्दर पूरी की जायेगी। जांच उपरान्त जो भी निर्णय लिया जायेगा वह श्रमिकों को मान्य होगा। यदि निर्णय किसी श्रमिक के विरुद्ध भी हुआ तो इस सन्दर्भ में श्रमिक किसी प्रकार का आन्दोलन जैसे टूल डाउन हड़ताल, Sit-In-Strike एवं धरना इत्यादि नहीं करेंगे। शेष 22 श्रमिकों को प्रारम्भिक जांच पूर्ण होने के बाद लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 20–10–2011 से वापिस नौकरी पर लिया जायेगा।

2. दिनांक 07–10–2011 से दिनांक 18–10–2011 की अवधि में 32 श्रमिकों की सेवाएं समाप्त कर दी गइ थी, 10 श्रमिकों को निलम्बित कर दिया गया था तथा 8 तकनिशियन प्रशिक्षणार्थियों को टर्मिनेट कर दिया गया था, इनमें से सभी 8 तकनिशियन प्रशिक्षणार्थियों को बतौर ट्रेनी पुनः लिया जायेगा। जिन 32 श्रमिकों को सेवाएं समाप्त की गई थी उनमें से 7 श्रमिकों के सेवा समाप्ति के आदेश प्रबंधन द्वारा निलम्बन में तबदील किये जायेंगे, परन्तु उनके विरुद्ध घरेलू जांच की जायेगी और जांच के आधार पर जो निर्णय होगा वह मान्य होगा। यदि निर्णय किसी श्रमिक के विरुद्ध भी हुआ तो इस सन्दर्भ में श्रमिक किसी प्रकार का आन्दोलन जैसे टूल डाउन हड़ताल, Sit-In-Strike एवं धरना इत्यादि नहीं करेंगे। शेष 25 श्रमिकों को प्रारम्भिक जांच पूर्ण होने के बाद लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 20–10–2011 से वापिस नौकरी पर लिया जायेगा। जिन 10 श्रमिकों को निलम्बित किया गया था, उनमें से श्री अशोक कुमार अनुबन्ध "क" के क.सं. नं. 807222 का निलम्बन जारी रहेगा और उसके विरुद्ध घरेलू जांच की जायेगी। यदि निर्णय इस श्रमिक के विरुद्ध भी हुआ तो इस सन्दर्भ में कोई भी श्रमिक किसी प्रकार का आन्दोलन जैसे टूल डाउन (बाकी पेज तीन पर)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011